आर्थिक युद्धः युद्ध के एक हथियार के रूप में

*वीरेंद्र सिंह गुर्जर
**डॉ. ऋषिकेश गुर्जर

शोध सारांश

मुख्य परिकल्पना :– ''प्रस्तुत शोध पत्र की मुख्य परिकल्पना इस बात पर आधारित है कि आधुनिक युग में कोई भी देश सीधे सैनिक युद्ध नही लड़के, अर्थव्यवस्था एवं व्यापार को युद्ध के हथियार के रूप में प्रयुक्त करते है आज के परिप्रेक्ष्य में युद्ध का अर्थ सिर्फ व्यक्तियों या संपत्ति के ध्वंस से नही निकाला जाना चाहिए, आधुनिक दुनिया मानव मस्तिष्क में लगातार युद्ध जारी रखे हुए है, पश्चिम एवं एशियाई देशों के बीच लगातार आर्थिक युद्ध लड़े जा रहे है चीन के आर्थिक उदय एवं आर्थिक शक्ति बनने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि भविष्य में इस तरह के युद्ध बड़े पैमाने पर लड़े जाएंगे, आर्थिक युद्धों के अलावा भी साइबर वार स्पेस वार जैसी युद्ध की नई तकनीकी उभर कर आई है, अमेरिका की कंपनी जेपी मॉर्गन की वेबसाइट को हैंक किया जाना साइबर युद्ध का एक बेहद खास उदाहरण है, 2007 में इजरायल ने सीरिया के उन परमाणु ठिकानों पर हमला किया जहां इजराइल को शक था कि यहॉ उत्तर कोरिया की मदद से परमाणु हथियार विकसित किए जा रहे है इन हमलो से पूर्व इजरायल ने सीरियाई वायु सेना के डिफेंस सिस्टम को हैंक कर लिया और सीरियाई राडार वही दिखा रहे थे जो इजरायली दिखाना चाहते थे''

युद्ध प्रकृति के एक नियम की तरह है जो मानव जाति सहित संपूर्ण जीवो की जीवन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है मानव इतिहास में इन संघर्षों अथवा युद्धों को न केवल सशस्त्र और सुसज्जित सैनिको, युद्ध की नई–नई तकनीकों नए नए हथियारों एवं अलग–अलग कारणों से लड़ा जाता रहा है बल्कि आर्थिक विषयों एवं वैज्ञानिकों द्वारा बनाए गए हथियारों से भी लड़ा गया है, विभिन्न हथियारों या हथियारों की आधुनिक प्रणालियों के उपयोग के कारण युद्ध में भारी रक्तपात परिणाम के रूप में आता है जबकि आर्थिक युद्ध बिना रक्तपात के किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का ध्वंस करता है और उस देश को भारी नुकसान पहुँचाता है।

"Economic Warfare is a warfare based on non-military methods and means with the purpose to hit the opponent economy. At the end of the warfare the opponent's economy should have lost market shares and the own economcy should be better off"

जैसा की परिभाषा बताती है आर्थिक युद्ध के वाहक के रूप में युद्धक टैक, लड़ाकू विमान या परमाणु पनडुब्बी जैसे हथियार नही है इस युद्ध में कोई बहुत बड़े सेना अधिकारी या जनरल युद्ध के नायक नही होते है बल्कि इस युद्ध के नायक बंद कमरों में बैठे हुए उच्च कोटि के अर्थशास्त्री होते है, आर्थिक मुद्दों के नायक इस तरी की आर्थिक नीतियां अंतराष्ट्रीय स्तर पर लागू करवाते है जिससे कि विरोधी देश की अर्थव्यवस्था विपरीत दशाओं से गुजरती है और अंततः विरोधी अर्थव्यवस्था का ध्वंस हो जाता है।

आर्थिक युद्धों के बेहतरीन उदाहरण

1. **14वीं शताब्दी में मंगोलो द्वारा जैविक युद्ध :–** 1343 में जानी बेग के नेतृत्व में मंगोलिया ने क्रीमिया प्रायद्वीप के कैफा को घेर लिया और यह घेराबंदी एक साल तक चलती रही, 1344 में एक इटालियन राहत बल ने 15000 मंगोलियाई सैनिकों को मार डाला एवं घेराबंदी की मशीनों को नष्ट कर दिया, जानी बेग ने 1345 में घेराबंदी का नवीनीकरण किया लेकिन एक साल बाद फिर से घेराबंदी उठाने के लिए मजबूर हो गया इस बार मंगोलियाई सेना में प्लेग से संक्रमित सैनिकों के कैडरों को घेरकर कैफा में जबरन घुसा दिया जिससे कैफा के मूल निवासियों में प्लेग की बीमारी फैल गई और बाद में कैफा के इन्ही निवासियों ने कैफा से मेडिटेरियन बेसिन

तक प्लेग की बीमारी को फैला दिया

2. **उन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत में नेपोलियन की महाद्वीवीपीय प्रणाली –** नेपोलियन की महाद्वीवीपीय व्यवस्था ने सैन्य तरीकों से इंग्लैंड पर आक्रमण नहीं किया, उन्होंने सोचा कि इंग्लैंड को आर्थिक युद्ध से हराया जा सकता है। मई 1806 में ग्रेट ब्रिटेन ने फ्रांसीसी और फ्रांसीसी–सहयोगी गठबंधन के खिलाफ एक नौसना नाकाबंदी का आयोजन किया। 21 नवंबर 1806 को जारी किए गए एक प्रतिक्रिया के रूप में नेपोलियन ने तथाकथित बर्लिन फरमान सुनाया, बर्लिन के फरमान ने यूरोपीय देशों के ब्रिटेन या ब्रिटेन के सहयोगी देशों के साथ व्यापार करने पर रोक लगा दी, एवं ब्रिटेन की समुद्रों में नाकाबंदी की जिसे एंबार्गो के नाम से जाना जाता है, हालांकि ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था परिस्थिति का मुकाबला करने में सक्षम साबित हुई और साथ में तस्करी होने के कारण उतना बड़ा नुकसान नही हो पाया, बेल्जियम और स्विट्जरलैंड जैसे देशों को ब्रिटेन से इस दौरान प्रतिस्पर्धा नही होने के कारण फायदा भी हुआ।

3. **द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ ऑपरेशन बर्नहार्ड –** 1940 की गर्मियों और शरद ऋतु के बीच ब्रिटेन की लड़ाई के परिणाम ने जर्मनी को सिखाया कि ब्रिटेन को सैन्य साधनों से जीतना संभव नही है, इसलिए जर्मनी ने 1939 में ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ एक आर्थिक युद्ध का आयोजन किया, ऑपरेशन बर्नहार्ड का नाम जर्मन मेजर बर्नहार्ड क्रूगर के नाम पर रखा गया जो जाली बैंक नोटों की छपाई के काम को आगे बढ़ाने के लिए जिम्मेदार थे, उस समय विश्वव्यापी मुद्रा के रूप में पाउंड ही प्रचलित थी इस ऑपरेशन में ब्रिटिश अर्थव्यवस्था में 5, 10, 20 और 50 के फर्जी पाउंड नोट घुसपैठ करवाने थे और अर्थव्यवस्था को अस्थिर करना था प्रारंभ में यह और के फर्जी पाउंड नोट घुसपैठ करवाने थे और अर्थव्यवस्था को अस्थिर करना था प्रारंभ में यह योजना बनाई कि बैंक नोटों को विमान से गिरा दिया जाए, परंतु व्यवहार में इस योजना को लागू नही किया जा सका क्योंकि जर्मनों के पास पर्याप्त विमान नही थे, फर्जी पांउड नोट बनाने के लिए कैदियों को कुशल बनाया गया, अप्रैल 1945 में प्रिंटिंग प्रेस ने 134,610,810 (आज 3 बिलियन पाउंड के कुल मूल्य के साथ लगभग 9 मिलियन बैंक–नोटों का उत्पादन किया, इन जाली बैक–नोटों को अब तक का सबसे आदर्श नकली नोट माना जाता है, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने 1943 में जाली नोटों के अस्तित्व का पता लगाया, और इसे ''अब तक का सबसे खतरनाक ऑपरेशन'' घोषित किया, जाली बैंक–नोटों के अस्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने के बाद, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने रक्षा माप शुरू किए, जो जाली बैंक–नोटों के कारण होने वाली क्षति को नियंत्रित करने में समक्ष थे, ऑपरेशन सफल नही हुआ क्योंकि यह बहुत देर से शुरू हुआ था।

आर्थिक युद्ध को सफलतापूर्वक लड़ने में नीतियों का प्रयोग

1. **राजकोषीय नीतियों को हथियार के रूप में प्रयोग करना –** राजकोषीय नीति स्वयं की अर्थव्यवस्था की प्रतिस्पर्धा में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण हथियार है। करों, सीमा शुल्क, जानबूझकर दी गयी छूटों के साथ राज्य अपनी अर्थव्यवस्थाओं की प्रतिस्पर्धा को मजबूत कर सकते है।

   उदाहरण : यूरोपीय देशों ने विमान बनाने वाली कंपनी एअरबस इंडस्ट्रीज को स्थापित करने के लिए अपनी राजकोषीय नीतियों को परिवर्तित का एअरबस इंडस्ट्रीज को बड़े पैमाने पर सब्सिडी एवं बेहद कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध करवाएं एयरबस का पहले मॉडल A - 300 जो मई 1969 में लॉन्च हुआ था इसके लिए 800 मिलियन यूएस–डॉलर की सब्सिडी दी गई, इसके अलावा A - 300 और A - 340 के निर्माण के लिए 4.5 बिलियन यूएस डॉलर की सब्सिडी दी गई, प्रदान किए गए ऋणों के भुगतान के लिए सर्वोत्तम परिस्थितियों के कारण एअरबस इंडस्ट्रीज अपने सबसे महत्वपूर्ण प्रतियोगी बोइंग की तुलना में अपने विमानों की कम कीमत रखने में सफल रहा इस आर्थिक नीति का जवाब देने के लिए बोइंग कम्पनी भी निष्क्रिय नहीं रही, संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा मंत्रालय से एक सार्वजनिक निविदा जारी हुई जिसमें अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन को 52 बिलियन अमेरिकी डॉलर का आर्डर देना था, इस निविदा के लिए एअरबस इंडस्ट्रीज ने अमेरिकी आधारित रक्षा सामग्री बनाने वाले नॉथ्रॉप–ग्रुम्मन ग्रुप को अपना रणनीतिक साझेदार बनाया यह नॉथ्रॉप–ग्रुम्मन ग्रुप अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में अपनी अच्छी पैठ रखता था लेकिन निविदा के अंतिम दिनों में इस ग्रुप ने जानबूझकर रणनीतिक साझेदारी को छोड़ दिया निविदा में अंतिम सर्वश्रेष्ठ प्रस्ताव प्रक्रिया के बाद बोइंग को 52 बिलियन यूएस–डॉलर का ऑर्डर मिला।

2. मौद्रिक नीतियां हथियार के रूप में

स्वयं के निर्यात के मूल्य को कम करने के लिए स्वयं की मुद्रा का अवमूल्यन करना। चीन के द्वारा प्रयोग किया गया।

एक हथियार के रूप में स्टॉक एक्सचेंज का प्रयोग करना

जानबूझ के दूसरे देश की मुद्रा को कमजोर कर देना वर्तमान में रूसी मुद्रा रूबल को अंतर्राष्ट्रीय थिंक टैंक द्वारा एक आर्थिक युद्ध के तहत कमजोर किया गया

3. व्यापार युद्ध (Trade War)

व्यापार युद्ध एक आर्थिक संघर्ष है जो अत्यधिक संरक्षणवाद से उत्पन्न होता है, जिसमें एक पक्ष द्वारा बनाई व्यापारिक नीतियों के द्वारा दूसरे देशों के खिलाफ टैरिफ व अन्य व्यापार बाधाओं को बढ़ाया या घटाया जाता है, व्यापार युद्ध तब होता है जब कोई दूसरा पक्ष आयात शुल्क बढ़ाकर या विरोधी देश के आयात पर प्रतिबंध लगाकर जवाबी कारवाई करता है। व्यापार संबंधी तरीके आर्थिक युद्ध के महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि व्यापार हर देश को बेहतर बनाता है सीमाओं के पार माल और सेवाओं के आयाता निर्यात को नियंत्रित करने के लिए बहुत सारे तरीके प्रयोग में लिए जाते है उनमें से मुद्रा की विनिमय दर भी एक है, देश आयात निर्यात को प्रभावित करने के लिए जानबूझकर मुद्रा को कमजोर या मजबूत बनाते है किसी देश के साथ व्यापार का पूर्णतया निषेध करने को एंबार्गो (Embargo) कहा जाता है संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा क्यूबा पर एंबार्गो लगाए गए। हाल ही में डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने आधिकारिक तौर पर चीन से 34 अरब डालर के उत्पादों पर अधिक टैरिफ लगाने की घोषणा की और इसका जवाब देने के लिए चीन ने भी अमेरिका के साथ व्यापार युद्ध चालू किया ट्रंप ने एकतरफा राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एलूमिनियम और स्टील पर आयात शुल्क बढ़ाने के साथ यह व्यापार युद्ध शुरू किया भारत सहित कई देशों ने इसका विरोध किया है इतिहास में व्यापर युद्ध के बहुत सारे कुख्यात उदाहरण है।

1. बोस्टन टी पार्टी (The Boston Tea Party)

यह ब्रिटिश पार्लियामेंट और अमेरिकन उपनिवेश वादियों के बीच लड़ा गया, 1773 में अमेरिका में ब्रिटेन द्वारा लगाए गए टैक्सों के खिलाफ एक आंदोलन शुरू किया गया विरोध होने पर कुछ टैक्सों को हटा लिया गया परन्तु चाय पर लगे टैक्स को नही हटाया गया, भारत से व्यापार के लिए बोस्टन भेजे गए चाय के 342 पैकेट को समुद्र में फेंक दिया गया और ब्रिटिश पार्लियामेंट को टैक्स हटाने के लिए मजबूर किया गया।

2. 1930 का स्मूट–हॉली एक्ट

अमेरिकी राष्ट्रपति हर्बटै हूवर ने ग्रेट डिप्रेशन के शुरूआती वर्षो के दौरान एक कृषि संकट से निपटने के लिए कृषि आयात पर शुल्क का प्रस्ताव रखा, सीनेटर रीड स्मूट और विलिस सी हॉली ने एक एक्ट बनाया जिसमें कृषि के साथ–साथ अन्य औधोगिक टेरिफ जोड़े गए यह एक्ट 1000 अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा समर्थित किया गया इसके बावजूद असफल रहा क्योंकि दुनिया ने इसकी प्रतिक्रिया में अमेरिका के निर्यात पर भारी टैरिफ लगाए जिसमें अमेरिका का व्यापार ही संकट में आ गया और इस एक्ट को हटाना पड़ा, 1933 में अमेरिकी निर्यात में 61 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी।

3. 1960 का चिकन टैरिफ वॉर

1950 के दशक में अमेरिकी चिकन की खेती ने बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया पूरी दुनिया में सस्ता अमेरिकी चिकन उपलब्ध करवाया जिससे फ्रांस, जर्मनी, जापान सहित कई देशो के घरेलू चिकन उद्योग को नुकसान हुआ, इस नुकसान को रोकने के लिए यूरोप में पक्षियों के आयात पर टैरिफ लगाया गया जिससे अमेरिकी पोल्ट्री उद्योग के नुकसान हुआ, प्रतिक्रिया देते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन की अगुवाई में, फॉक्सवैगन बसों, फ्रांसीसी, ब्रांडी, आलू, स्टार्च और डेक्सट्रिन सहित ''हल्के ट्रको'' पर 25 प्रतिशत कर लगा दिया और इस तरह परस्पर टैरिफ बढ़ाने से एक व्यापार युद्ध शुरू हो गया।

4. जापान के साथ 1987 का व्यापार युद्ध

1987 में, राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने 300 मिलियन डॉलर मूल्य के जापानी कंप्यूटर, बिजली उपकरण और टीवी आयात शुल्कों को दोगुना कर दिया। प्रशासन ने कहा कि टैरिफ जापान द्वारा एक समझौते का पालन करने में

विफलता के जवाब में थे कि देश अपने बाजारों में अधिक अमेरिकी आयात की की अनुमति देगा और अमेरिकी सेमीकंडक्टर कंप्यूटर चिप्स का कम टैरिफ पर आयात करने देगा। हालांकि जापान ने व्यापार युद्ध शुरू न करने का निर्णय लिया और जापान के व्यापार मंत्री हाजिम तमुरा ने दुनिया में मुक्त व्यापार प्रणाली को बढ़ाने के पक्ष में प्रतिक्रिया दी, जापानी कारों ने अमेरिका में 3 प्रतिशत की गिरावट देखी और 1984 में, अमेरिकी उपभोक्ताओं ने आयात शुल्क के कारण अनुमानित $ 53 बिलियन का अधिक भुगतान किया।

5. 2002 का स्टील टैरिफ

2002 ब्रिटेन में स्टील कम्पनीयों के यूनियन लीडर को चेतावनी दी थी कि स्टील के आयात पर संयुक्त राज्य अमेरिका के नए टैरिफ की वजह से 5,000 से अधिक नौकरियों को खत्म किया जा सकता है। देश के इस्पात उद्योग को बढ़ावा देने के प्रयास में, जॉर्ज डब्ल्यू बुश ने इस्पात आयात पर 8.30 प्रतिशत संघ ने इसकी प्रतिक्रिया में अमेरिका के फ्लोरिडा से आयात होने वाले संतरे एवं अमेरिकी कारों पर अधिक टैरिफ लगाकर जवाबी कारवाई की, इसके अलावा विश्व व्यापार संगठन के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के खिलाफ एक शिकायत भी दर्ज की गई थी, जिसने अमेरिका को टैरिफ दर प्रतिबद्धताओं के उल्लंघन का दोषी पाया गया।

निष्कर्ष :– शोध पत्र में बहुत सारे आर्थिक युद्ध के उदाहरण एवं हाल ही में अमेरिका और चीन के बीच शुरू हुए आर्थिक युद्ध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मनुष्य राष्ट्रवाद के दौर के पहले भी आर्थिक युद्धों में संलिप्त रहा होगा, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रवाद के स्थापित होने के बाद तो आर्थिक युद्ध निरन्तर लड़े जाते रहे है अमेरिका द्वारा सोवियत संघ को विघटित कर देने में प्रमुख हथियार के रूप में आर्थिक युद्ध को ही आजमाया गया, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमतों में भारी कमी करके रूस की अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया गया था वास्तव में वर्तमान की पूरी अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था ही आर्थिक युद्ध के द्वारा नियंत्रित हो रही है संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अमेरिका के द्वारा ईरान, उत्तरी कोरिया जैसे देशों पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाते है यह भी आर्थिक युद्ध का एक उदाहरण है और इन्ही प्रतिबंधों के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ युद्ध, नियत्रंक हथियार के रूप में प्रयुक्त होने लगे है जिनके द्वारा एक शक्तिशाली देश या कोई भी अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था बनाए रखने वाला संगठन जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तराष्ट्रीय व्यवस्था को तोड़ने वाले देशों को नियंत्रित करता है।

***शोधार्थी**
विभाग इतिहास
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

Referance

1. Lesley Kennedy ,7 Contentious Trade War in U.S.History , A&E Television Network, September 21,2018 & October 2,2018
2. Wheelie M: Biological Warfare at the 1346 Siege of Caffa, in Historical Review, Volume 8, Number 9, September 2002
3. Harald Pocher,- Boeing Wins Contract to Build Air Force Tankers, in The New York Times, February 24, 2011,
4. Nicholas A. Lambert ,Brits Krieg:-The Strategy of Economic Warfare, From Understanding Cyber Conflict: Fourteen Analogies
5. George Perkovich and Ariel E. Levite, Editors
6. Published by Georgetown University press